लग्न: उगती राशि। दशा: ग्रहों से जुड़ी समय की अवधि। नक्षत्र: चंद्रमा के पथ का एक भाग।

नमूना रिपोर्ट · काल्पनिक व्यक्ति

आरव शर्मा की संपूर्ण दोष रिपोर्ट

सिंह लग्न पर ग्यारह जाँचें: पास बैठे गुरु से कोमल हुआ हल्का मांगलिक दोष, स्वयं भंग होने वाला केमद्रुम, और इतने बलवान शनि कि वे अपनी दशाओं का सामना अच्छे से करें।

जन्म	स्थान	लग्न	राशि · नक्षत्र
15 अगस्त 1991, 06:40	Jaipur, Rajasthan, India	सिंह	तुला · चित्रा 3

इस रिपोर्ट में

01 एक नज़र में आपके दोष

02 मांगलिक दोष

03 काल सर्प और छाया ग्रह

04 पितृ, ग्रहण और पूर्वजों से जुड़े दोष

05 गुरु चांडाल, श्रापित, अंगारक और विष

06 केमद्रुम और गंडमूल

07 शनि: साढ़े साती और ढैया

08 पारंपरिक उपाय

09 यह रिपोर्ट कैसे बनी

01 एक नज़र में आपके दोष

आरव, दोष शब्द का अर्थ है कमी या असंतुलन। ज्योतिष में यह ग्रहों के ऐसे योग का नाम है जिसे परंपरा समझने और संतुलित करने को कहती है, आपके जीवन पर कोई फ़ैसला नहीं। यह रिपोर्ट आपकी कुंडली में उन ग्यारह दोषों की जाँच करती है जिनके बारे में लोग सबसे अधिक पूछते हैं, और हर एक को आपकी बाकी कुंडली के साथ पढ़ती है।

जाँच में क्या मिला

ग्यारह जाँचों में से केवल दो में कुछ मिला, और दोनों कोमल हैं। मांगलिक दोष हल्के रूप में है: लग्न से गिनें तो मंगल आपके पहले भाव में हैं, पर चंद्रमा से गिनें तो नहीं। केमद्रुम, जो चंद्रमा के अकेले होने का योग है, आपकी कुंडली में बनता है और फिर केंद्र भावों में बैठे ग्रहों से भंग हो जाता है।

बाकी नौ नहीं हैं: काल सर्प, पितृ दोष, ग्रहण दोष, गुरु चांडाल, श्रापित, अंगारक, विष, गंडमूल, और अभी चल रही साढ़े साती या ढैया। आपके चंद्रमा पर शनि का अगला काल, एक ढैया, अगस्त 2029 में शुरू होता है, और आपकी साढ़े साती अक्टूबर 2038 में। दोनों शनि वाले अध्याय में हैं।

> ✦ ग्यारह में से दो जाँचों में कुछ मिला: हल्का मांगलिक दोष और भंग हुआ केमद्रुम। नौ साफ़ हैं।

दोष को कैसे पढ़ें

आपका लग्न सिंह है, 6°18′ पर मघा नक्षत्र में, और आपका चंद्रमा तुला में, चित्रा नक्षत्र के तीसरे चरण में है। इस रिपोर्ट में सब कुछ इन्हीं दो बिंदुओं से गिना गया है। दोष को सदा बाकी कुंडली के बल के साथ तौला जाता है, और आपकी कुंडली बलवान है: आपके लग्न में चार ग्रह उदित हैं और शनि अपनी राशि में हैं।

यह बताना भी ईमानदारी है कि हर दोष कहाँ से आता है। मांगलिक दोष और केमद्रुम शास्त्रीय ग्रंथों में वर्णित हैं। काल सर्प, पितृ, ग्रहण, गुरु चांडाल, श्रापित, अंगारक, विष और गंडमूल आज बहुत प्रचलित हैं, पर बाद की और क्षेत्रीय परंपराओं से आते हैं; पराशर इनका नाम नहीं लेते। हम इन्हें इसलिए जाँचते हैं क्योंकि परिवार इनके बारे में पूछते हैं, और साफ़ बताते हैं कौन-सा कहाँ से है।

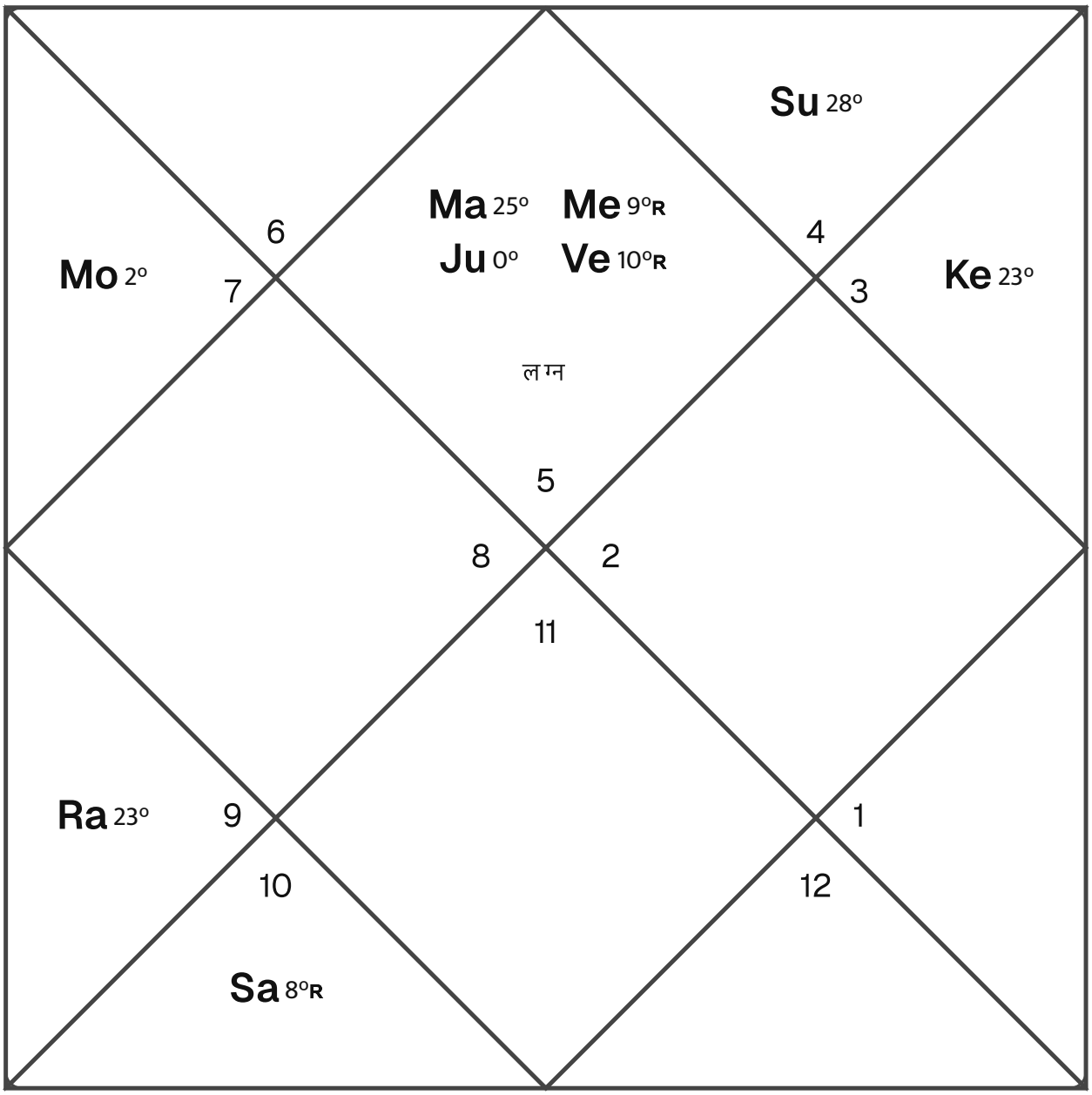

▶ कुंडली की तालिका देखें

आपकी गणना की गई कुंडलियाँ। दशमांश (D10) लग्न तुला है। दशमांश करियर और पद की वर्ग कुंडली है।

02 मांगलिक दोष

मांगलिक दोष के बारे में परिवार सबसे अधिक पूछते हैं, क्योंकि यह पारंपरिक कुंडली मिलान का हिस्सा है। यह तब गिना जाता है जब मंगल लग्न या चंद्रमा से पहले, दूसरे, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में हों।

आपके मंगल कहाँ हैं

आपके मंगल सिंह में 25°16′ पर, पूर्वा फाल्गुनी चरण 4 में, आपके पहले भाव में हैं। लग्न से गिनें तो यह छह दोष भावों में से एक है, इसलिए लग्न से मांगलिक दोष बनता है। तुला में बैठे आपके चंद्रमा से गिनें तो मंगल ग्यारहवें स्थान में हैं, जो दोष का स्थान नहीं है। ज़्यादातर परंपराएँ केवल एक आधार से बने दोष को हल्का रूप मानती हैं, और आपकी कुंडली ऐसे ही पढ़ी जाती है।

सिंह सूर्य की राशि है, जो मंगल के मित्र हैं, इसलिए आपके मंगल सहज स्थिति में हैं। पहले भाव में वे ऊर्जा, साहस, सीधा स्वभाव और किसी महत्वपूर्ण बात पर तुरंत प्रतिक्रिया देते हैं। यही आग है जिसे दोष की परंपरा निकट संबंधों में सावधानी से सँभालने को कहती है।

> ✦ हल्का मांगलिक दोष: लग्न से मंगल आपके पहले भाव में, चंद्रमा से दोष का स्थान नहीं।

इसे क्या कोमल करता है

आपके मंगल के पास गुरु भी सिंह में, आपके पहले भाव में, बैठे हैं। बहुत-सी परंपराएँ गुरु के साथ को मांगलिक दोष को कोमल करने वाले सबसे प्रबल कारणों में गिनती हैं: ज्ञान का ग्रह ताप के ग्रह को शांत करता है। इंजन आपके दोष को भंग नहीं, हल्का दर्ज करता है, क्योंकि सबसे मान्य परिहार (मंगल अपनी या उच्च राशि में) यहाँ लागू नहीं होते, पर गुरु का साथ एक वास्तविक और पारंपरिक आश्वासन है।

मिलान में, जब दोनों साथी मांगलिक हों तो दोष संतुलित हो जाता है। उसी हल्के रूप वाला, या किसी भी मांगलिक दोष वाला साथी शास्त्रीय नियम से आपके दोष को संतुलित करता है, और किसी निष्कर्ष से पहले पूरा गुण मिलान और दोनों कुंडलियाँ सदा साथ पढ़ी जाती हैं।

इसके साथ अच्छे से जीना

लग्न में मंगल को बात रखने की कला चाहिए। नियमित व्यायाम, कोई खेल या कोई भी नियम से शारीरिक अभ्यास इसकी ऊर्जा को रचनात्मक रखता है। संबंधों में पहले से तय कर लें कि मतभेद कैसे सुलझाएँगे, और अपनी गर्मजोशी को, जो इस कुंडली में प्रबल है, अपने शब्दों की अगुवाई करने दें।

03 काल सर्प और छाया ग्रह

राहु और केतु, चंद्रमा के पात, सदा ठीक एक-दूसरे के सामने रहते हैं। काल सर्प तब माना जाता है जब सातों ग्रह इनकी धुरी के एक ही ओर हों।

काल सर्प क्यों नहीं बनता

आपकी कुंडली में ग्रह राहु–केतु धुरी के दोनों ओर हैं, इसलिए काल सर्प नहीं बनता। मकर में शनि एक ओर हैं, जबकि कर्क में सूर्य, तुला में चंद्रमा और सिंह के चारों ग्रह दूसरी ओर। यहाँ कुछ करने की ज़रूरत नहीं।

काल सर्प बाद की परंपराओं में से एक है: यह पराशर में नहीं है, और जहाँ इसका प्रयोग होता भी है, वहाँ इसे दुर्भाग्य नहीं, तीव्रता के रूप में पढ़ा जाता है।

पाँचवें भाव में राहु, ग्यारहवें में केतु

राहु धनु में 23°25′ पर, आपके पाँचवें भाव में, पूर्वाषाढ़ा चरण 4 में बैठे हैं। पाँचवाँ भाव रचनात्मकता, अध्ययन, संतान और बुद्धि का भाव है। यहाँ राहु नए विचारों, अपरंपरागत विषयों और सामान्य पाठ्यक्रम से आगे के ज्ञान की बेचैन भूख लाते हैं।

केतु मिथुन में 23°25′ पर, आपके ग्यारहवें भाव में, पुनर्वसु चरण 2 में बैठे हैं। लाभ और संपर्कों के भाव में केतु एक अनासक्ति देते हैं: आप बड़े समूह से अधिक कुछ सार्थक मित्रताओं को महत्व दे सकते हैं, और लाभ आत्म-प्रचार से नहीं, शांत विशेषज्ञता से आ सकता है। आपकी कुंडली में इनमें से कोई स्थिति दोष नहीं बनाती।

04 पितृ, ग्रहण और पूर्वजों से जुड़े दोष

पितृ दोष और ग्रहण दोष, दोनों सूर्य और चंद्रमा, कुंडली के दो प्रकाशों, और राहु–केतु से उनके मिलन को देखते हैं।

पितृ दोष: नहीं है

पूर्वजों से जुड़े पितृ दोष को तीन तरह से जाँचा जाता है: सूर्य राहु या केतु के साथ, नौवें भाव में राहु या केतु, और नवमेश राहु या केतु के साथ। आपकी कुंडली में इनमें से कोई नहीं बनता।

आपके सूर्य कर्क में, आपके बारहवें भाव में, दोनों छाया ग्रहों से दूर हैं। आपका नौवाँ भाव, जो पिता, गुरुओं और भाग्य का भाव है, मेष है, और उसमें कोई छाया ग्रह नहीं है। उसके स्वामी मंगल आपके पहले भाव में हैं, और राहु या केतु उनके साथ नहीं हैं।

> ✦ पितृ और ग्रहण दोष नहीं हैं: न सूर्य, न चंद्रमा राहु या केतु के साथ हैं।

ग्रहण दोष: नहीं है

ग्रहण के नाम पर बना ग्रहण दोष तब बनता है जब सूर्य या चंद्रमा राहु या केतु की राशि में हों। आपके सूर्य कर्क में और चंद्रमा तुला में हैं, जबकि छाया ग्रह धनु और मिथुन में हैं, इसलिए आपकी कुंडली में कोई प्रकाश ग्रहित नहीं है।

दोष न होने पर भी पूर्वजों को याद करने और उनका धन्यवाद करने की परंपरा एक कोमल और सार्थक अभ्यास है। परिवार पितृ पक्ष में श्राद्ध करते हैं और साल भर बड़ों की देखभाल करते हैं; ये कृतज्ञता के कार्य हैं, किसी समस्या के उपाय नहीं।

05 गुरु चांडाल, श्रापित, अंगारक और विष

ये चारों दोष दो ग्रहों के एक राशि में होने को देखते हैं। ये बाद की परंपराएँ हैं, और आपकी कुंडली में इनमें से कोई नहीं बनता।

गुरु चांडाल और श्रापित

गुरु चांडाल का अर्थ है गुरु और राहु एक राशि में। आपके गुरु सिंह में और राहु धनु में हैं, इसलिए यह नहीं बनता। गुरु केतु के साथ भी नहीं हैं, जिसे कुछ परंपराएँ हल्का रूप मानती हैं।

श्रापित दोष का अर्थ है शनि और राहु साथ। आपके शनि मकर में, आपके छठे भाव में हैं और राहु धनु में, आपके पाँचवें भाव में: पड़ोसी राशियाँ, पर एक नहीं, इसलिए श्रापित दोष नहीं बनता।

अंगारक और विष

अंगारक दोष का अर्थ है मंगल राहु या केतु के साथ। आपके मंगल सिंह में, दोनों छाया ग्रहों से अलग हैं, इसलिए यह नहीं बनता।

विष दोष का अर्थ है चंद्रमा और शनि साथ। आपके चंद्रमा तुला में और शनि मकर में हैं, इसलिए यह नहीं बनता। आपका चंद्रमा उन भारी योगों से मुक्त है जिनका ये दोष वर्णन करते हैं, और यह एक कारण है कि आपकी कुंडली का मन बोझिल नहीं, गर्मजोशी भरा और मिलनसार है।

> ✦ कोई युति दोष नहीं: गुरु, मंगल, शनि और चंद्रमा छाया ग्रहों से और एक-दूसरे से अलग हैं।

06 केमद्रुम और गंडमूल

दो जाँचें स्वयं चंद्रमा को देखती हैं: क्या उसके दोनों ओर साथ है, और क्या उसका नक्षत्र छह गंडमूल नक्षत्रों में से है।

केमद्रुम: बनता है, फिर भंग होता है

केमद्रुम तब बनता है जब चंद्रमा से दूसरी या बारहवीं राशि में सूर्य और छाया ग्रहों के अलावा कोई ग्रह न हो। तुला में बैठे आपके चंद्रमा के दोनों ओर वृश्चिक और कन्या हैं, और दोनों ख़ाली हैं, इसलिए केमद्रुम बनता है।

शास्त्र इसका भंग भी बताते हैं: लग्न या चंद्रमा से केंद्र में ग्रह। आपके पहले भाव में चार ग्रह हैं, मंगल, बुध, गुरु और शुक्र, इसलिए केमद्रुम भंग हो जाता है। परंपरा में भंग हुए केमद्रुम को ऐसे व्यक्ति के रूप में पढ़ा जाता है जो अपने आसपास स्वयं सहारा बनाता है, और आपकी कुंडली ठीक यही दिखाती है: मिलनसार तुला के चंद्रमा के चारों ओर एक भरा-पूरा, आत्मविश्वासी लग्न।

गंडमूल: नहीं है

छह गंडमूल नक्षत्र हैं अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल और रेवती। आपका चंद्रमा चित्रा, चरण 3 में है, जो इनमें से नहीं है, इसलिए गंडमूल शांति पर विचार की ज़रूरत नहीं।

07 शनि: साढ़े साती और ढैया

साढ़े साती लगभग साढ़े सात वर्ष का वह समय है जब गोचर में शनि आपके चंद्रमा से बारहवीं, पहली और दूसरी राशि से गुज़रते हैं। ढैया चंद्रमा से चौथे या आठवें स्थान में शनि का गोचर है।

आपके शनि के काल

अभी आपके लिए न साढ़े साती चल रही है, न ढैया। आपकी पिछली ढैया, जब गोचर में शनि आपके चंद्रमा से चौथे स्थान में थे, जनवरी 2020 से जनवरी 2023 तक चली।

अगली ढैया तब है जब गोचर में शनि आपके चंद्रमा से आठवें स्थान में होंगे, अगस्त 2029 से मई 2032 तक। आपकी साढ़े साती अक्टूबर 2038 में शुरू होकर दिसंबर 2046 तक चलेगी। वह कई वर्ष दूर है, और चिंता के बजाय शांति से तैयारी का पूरा समय है।

> ✦ अभी शनि का कोई काल नहीं। आगे: अगस्त 2029 से मई 2032 तक ढैया, और अक्टूबर 2038 से साढ़े साती।

आपके शनि क्यों मदद करते हैं

शनि का काल कैसा लगेगा, यह बहुत कुछ जन्म के शनि पर निर्भर करता है। आपके शनि मकर में, अपनी राशि में, आपके छठे भाव में हैं, जो काम, सेवा और बाधाओं पर विजय का भाव है। यह शनि की सबसे बलवान स्थितियों में से एक है। बलवान जन्म-शनि वाले लोग उसके कालों का सामना नियम से काम से करते हैं और उनसे कुछ ठोस बनाकर निकलते हैं।

व्यावहारिक तैयारी शनि की अपनी है: स्थिर दिनचर्या, सावधान वित्त, वचन निभाना और हाथों से कड़ी मेहनत करने वालों का सम्मान। 2029 से पहले ये आदतें बना लें, तो ढैया तनाव का नहीं, मज़बूती का समय बन जाती है।

आपका चंद्रमा तुला में है, जिसके स्वामी शुक्र हैं, और शुक्र शनि के स्वाभाविक मित्र हैं। परंपरा में मित्र राशि के चंद्रमा पर शनि का गोचर कठोर नहीं, माँग भरा माना जाता है: अधिक ज़िम्मेदारी और अधिक व्यवस्था, और पूरे काल में धीरे-धीरे मिलता फल।

08 पारंपरिक उपाय

ये पारंपरिक सहारे हैं, आपकी कुंडली के एक हल्के दोष और शनि के आने वाले कालों के लिए चुने गए। अच्छे जीवन के लिए ये कभी शर्त नहीं हैं।

मंगल के लिए

मंगलवार मंगल का दिन है। परंपरा में मंगलवार को हनुमान चालीसा का पाठ, हनुमान मंदिर में लाल मसूर या मिठाई अर्पित करना, और क्रोध भरे शब्दों के बजाय शारीरिक प्रयास चुनना बलवान मंगल से जुड़े अभ्यास हैं। नियमित व्यायाम सबसे व्यावहारिक उपाय है।

शनि के लिए, 2029 से पहले

शनिवार शनि का दिन है। शनिवार को तिल के तेल का दीपक जलाना, शनि स्तोत्र का पाठ, और मज़दूरों या बुज़ुर्गों की मदद करना शास्त्रीय अभ्यास हैं। कभी-कभी शनि के लिए नीलम जैसे रत्न सुझाए जाते हैं, पर केवल तब जब किसी भरोसेमंद ज्योतिषी ने पूरी कुंडली देखी हो, और डर से कभी नहीं।

मन और चंद्रमा के लिए

आपका तुला का चंद्रमा सामंजस्य, सौंदर्य और अच्छे साथ से स्थिर होता है। सोमवार चंद्रमा का दिन है; सादा भोजन, पानी के पास समय और भरोसेमंद लोगों से सच्ची बातचीत सबसे स्वाभाविक सहारे हैं। आपके अपने लग्न से केमद्रुम भंग होने के कारण परंपरा की सलाह बस इतनी है कि अपने आसपास लोगों का वह दायरा बनाते रहें जिसका आपकी कुंडली पहले से पक्ष लेती है।

09 यह रिपोर्ट कैसे बनी

इस रिपोर्ट के हर दोष की जाँच iAstroGuru Engine ने की है, और लाहिड़ी अयनांश तथा संपूर्ण राशि भाव का प्रयोग हुआ है। हर दोष का नियम इंजन में लिखा है, और बाद की परंपराओं को ऐसा ही चिह्नित किया गया है।

पाठ इन्हीं गणना किए गए तथ्यों से लिखा गया और जारी करने से पहले कुंडली से अपने आप मिलाकर जाँचा गया। ज्योतिष एक व्याख्यात्मक परंपरा है, घटनाओं की भविष्यवाणी का वैज्ञानिक रूप से स्थापित तरीका नहीं, और यहाँ कुछ भी चिकित्सीय, कानूनी या पैसे संबंधी सलाह नहीं है। यह नमूना एक काल्पनिक व्यक्ति, आरव शर्मा, के लिए तैयार किया गया है।

उन्नत iAstroGuru इंजन से गणना, भरोसेमंद संदर्भों से सटीकता के लिए परखी गई।
इन गणनाओं से स्वचालित व्याख्या, हर रिपोर्ट हमारी बहु-स्तरीय गुणवत्ता जाँच से परखी गई।

Shiv Shakti Software Solutions (iAstroGuru)
Digitally signed on 9 Oct 2026, 14:34 IST
Document ID IAG-5YQA-SS4K-1M9J